International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 1, January- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सुजान चरित:महाराजा सूरजमल का युद्ध कौशल

सुमन गोयल
सहायक आचार्य (इतिहास)
रामेश्वरी देवी कन्या महाविद्यालय भरतपुर (राजस्थान)

"सुजान चरित" कवि सूदन द्वारा रचित एक महत्त्वपूर्ण काव्य ग्रन्थ है । वीर कवि सूदन महाराजा सूरजमल के दरबार के प्रमुख कवि थे जिस प्रकार, महाकवि भूषण ने छत्रपति शिवाजी को और लाल ने छत्रसाल के चरित्र का वर्णन कर संसार में उन्हें ख्याति प्रदान की, उसी प्रकार कवि सूदन ने सुजान चरित नामक वीर रस से ओत-प्रोत ऐतिहासिक काव्य ग्रंथ की रचना कर महाराजा सूरजमल को संसार में प्रसिद्ध कर दिया । वह सूरजमल के साथ उसी प्रकार युद्ध क्षेत्र में रहते थे जिस प्रकार पृथ्वीराज चौहान के साथ चंदबरदाई । सुजान चरित ग्रंथ का नायक 18 वीं शताब्दी का प्रसिद्ध राजा सूरजमल है जिनका उपनाम सुजान सिंह था। उनका राज्य भरतपुर छोटा ,किंतु अत्यंत समृद्ध और सुशासित था । इसी कारण समकालीन राजा उनसे ईर्ष्या करते थे और समय-समय पर उनसे युद्ध करते थे। सुजान चरित्र में ऐसे ही 7 युद्धों का वर्णन है जो कि 1745 से लेकर 1753 तक लडे गए ।

18 वीं शताब्दी के प्रारंभ में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात मुगल राजतंत्र टूटता चला गया, सामंतवादी तत्व मजबूत हुए और नवीन स्वतंत्र राज्यों की संख्या बढ़ती गई, जिनमें मराठा अवध, बंगाल, हैदराबाद, कर्नाटक, मैसूर तथा राजपूत राज्य प्रमुख थे । प्लासी और बक्सर के युद्ध से यह स्पष्ट हो गया कि पश्चिमी पूंजीवाद हिंदुस्तान की पतनोन्मुखी दशा पर हावी हो रहा है । राजनीतिक विघटन, अराजकता तथा विभिन्न राज्यों में आपसी लड़ाईयों ने इस स्थिति को और अधिक भयावह बना दिया।

शाही सत्ता के पतन और दुर्व्यवस्था ने विदेशी हमलों और आंतरिक आक्रमणों के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया । मुगल सत्ता को चुनौती देते हुए छत्रसाल ने जहाँ शाही भूमि पर कब्जा कर लिया ,वहीँ बंदा बहादुर के नेतृत्व में सिखों ने हथियार उठा लिए । मराठों ने लगातार छापे मारकर मुगल साम्राज्य की जड़ें हिला दी और जाटों ने अपने आप को एक शक्ति के रूप में संगठित करना शुरू कर दिया।

नवजात जाट राज्य को सुदृढ़ करने और उसे सुरक्षित बनाए रखने के लिए सूरजमल ने अद्भुत साहस, शौर्य तथा सूझबूझ का परिचय दिया । महाराजा सूरजमल राजनीतिकुशल, दूरदर्शी, सुन्दर, सुडौल और स्वस्थ थे। वेंदेल के अनुसार जर्जर मुगल-सत्ता की इसी कालावधि में जाट-शक्ति उत्तरी भारत में प्रबल शक्ति के रूप में उभरकर सामने आई ।1

सूदन ने लड़ाई में भाग लेने वाले लोगों के नाम, उनकी पृष्ठभूमि ,उनके वस्त्र ,शस्त्र ,घोड़े, हाथियों तथा शिविर जीवन का विस्तृत उल्लेख करते हुए इन युद्धों का बड़ा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 1, January- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ही सजीव वर्णन किया है। ब्रजमंडल के पेड़ पौधे और जीव जंतुओं के काव्य मय वर्णन ,ग्रंथ के वैभव हैं । सुजान चरित में महाराजा सूरजमल द्वारा लड़े गए युद्ध में कवि स्वयं उपस्थित रहे। यह एक प्रत्यक्षदर्शी की रचना है ,जिसका अपना ही महत्व है । इनके घटना वर्णन की सत्यता के बारे में उल्लेख है कि उन्होंने केवल अपने चरित्र नायक का ही यश कीर्तन नहीं किया, बल्कि उनके शत्रुओ की वीरता, साहस और युद्ध कौशल का भी उतना ही ओजपूर्ण वर्णन किया है। कई स्थानों पर सुदन अन्य स्रोतों से सहमति व्यक्त करता है, तथापि कई स्थानों पर वह ऐसी जानकारियां भी उपलब्ध कराता है जो अन्य स्रोतों में प्राप्त नहीं हो सकी हैं । इससे इस ग्रंथ का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

मुग़ल सरदार असद खान कोइल के नबाब फतेह अली को परास्त कर कोइल की जागीर पर कब्ज़ा करना चाहता था । संकट के समय नबाब फतेह अली ने कुमार सूरजमल से भेंट कर सहायता मांगी । फतेह अली के साथ सूरजमल की ईखु में भेंटवार्ता एवं फौज खर्च भुगतान की शर्त का उल्लेख अन्य ग्रंथों में भी है ।2 वाकया राजस्थान के अनुसार नवंबर 1745 ईस्वी में नवाब अपने 2000 सवारों के साथ कोइल से 26 किलोमीटर आगे आ गया । इस युद्ध में कुमार सूरजमल के शौर्य व पराक्रम से असद खान निष्प्राण हो गया व उसकी सेना भाग निकली । जाट सवारों ने उनका पीछा किया और उनके हाथी घोड़े तुफंग तथा रसद आदि पर अधिकार कर लिया ।3 युद्ध के अंत का वर्णन कवि ने कुछ इस प्रकार से किया है :

असदखान कौं खाइ रन फतेअलीहि बचाइ ।
हरनाकुस प्रहलाद की लीला करी बनाइ ।।
फतेअली कौं कोल में तबही दिया पठाय।
आप आइ निज गढ़न में देखे पितु के पाय ।।4

इतिहास में इस जंग को "चंदोस की युद्ध" के नाम से जाना गया । इस जंग का उद्देश्य मुगल सरदार असद खान को नबाब फ़तेह अली की मदद करने के लिए पराजित करना ही नहीं था बल्कि ब्रज के पूर्वी सीमांत प्रदेश को शाही अधिकारियों के हस्तक्षेप से मुक्त करना भी था ।

द्वितीय जंग में कवि सूदन द्वारा बताया गया है की किस प्रकार जयपुर नरेश सवाई जय सिंह की मृत्यु के बाद ईश्वरी सिंह व माधव सिंह के बीच उत्तराधिकार युद्ध में सूरजमल ने ईश्वरी सिंह का पक्ष लेकर मराठा दल का नाश किया । 11 से 16 अगस्त 1748 में बगरू के महत्वपूर्ण युद्ध में कुमार सूरजमल ने अभूतपूर्व शौर्य में साहस का परिचय देते हुए न केवल मराठा नेता मल्हार राव होलकर के वारों को निष्फल किया वरन् गंगाधर टाटिया को भी पीछे धकेलने में सफल रहे ।सूरजमल के आत्मविश्वास एवं निश्चल भाव से जाटों को सफलता प्राप्त हुई । कालका रंजन कानूनगो ने लिखा कि "उस दिन कुमार सूरजमल ने अपने हाथों से उस दो घंटे के युद्ध में 50 वीरों को काटकर 108 को घायल किया ।"5 सूरजमल की वीरता और साहस की प्रशंसा राजकवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने भी मुक्त कंठ से इस प्रकार से की है :

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 1, January- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सह्यो भले हि जट्टनी, जाय अरिष्ट अरिष्ट ।
जाठर तस रविमल्ल हुव , आमेरन को इष्ट ।।
बहुरि जट्ट मल्हार सन , लरन लग्यो हरबल्ल ।
आंगर है हुल्कर ,जाट मिहर मल्ल प्रति मल्ल ।।6

तृतीय जंग में मीर बक्शी सलाबत खान व वजीर सफदरजंग की संयुक्त सेनाओं के द्वारा जाट राज्य पर किए गए आक्रमण का उल्लेख है । सूरजमल ने अपने वकील राजा मोहन सिंह सूर्य द्विज को मीर बक्शी से वार्ता हेतु भेजा जिसे घमंडी मीर बख्शी ने ठुकरा दिया ।7

जनवरी 1750 में सूरजमल ने 5000 जाट बंदूकची सवारों के साथ सलावत खां को छावनी में घेर लिया और उसकी रसद व्यवस्था भंग कर दी । सूरजमल ने अपने निकटतम सहयोगियों के साथ शाही खेमे पर रात में ही हमला कर दिया जिसमें बहुसंख्यक शाही सैनिक मारे गए । रुस्तम खां घायल हो गया और हकीम खान मारा गया । अंत में सलावत खां को आत्मसमर्पण कर जाटों से समझौता करना पड़ा और सुजान सिंह की शर्तें माननी पड़ी ।

सूरजमल और वजीर सफदरजंग की दुश्मनी का दोस्ती में परिणित होना व वजीर का पक्ष लेकर पठानों से संघर्ष करने की घटना को कवि सूदन ने सुजान चरित की चतुर्थ जंग में चित्रित किया है ।जिसमें वजीर व जाटों में समझौता व सूरजमल द्वारा अंतिम समय तक सफदरजंग का साथ निभाने का उल्लेख है ।

घासेहरा के युद्ध में राव बहादुर सिंह बडगूजर की पराजय का उल्लेख कवि सूदन ने पंचम जंग में किया है । घासेड़ा के राव बहादुर सिंह बडगूजर से सूरजमल का विवाद पुराना था । सूरजमल की दो आब के परगनों पर अधिकार करने की महत्वाकांक्षा के बीच राव बहादुर सिंह बाधक बन रहा था । सन 1753 में लड़े गए युद्ध में राव बहादुर सिंह व उनके पुत्र अजीत सिंह खेत रहे जिसका वर्णन कई अन्य ग्रंथों में भी मिलता है ।8

अपदस्थ वजीर सफदरजंग की सहायता के लिए शाही सेनाओं के विरुद्ध लड़ी लड़ाई को कवि सूदन ने छठवीं जंग का नाम दिया । शाही दरबार में इस समय गुटबाजी व षड्यंत्र चरम पर थे । वजीर सफदरजंग व बक्शी गाजीउद्दीन के बीच चली प्रतिस्पर्धा व षडयंत्रों के चलते बादशाह ने सफदरजंग को न केवल वजीर पद से हटा दिया वरन उन्हें दिल्ली से निष्कासित कर दिया । अब सफदरजंग ने जाटों की सहायता से दिल्ली विजय की सैन्य योजना तैयार की तथा शाही सेना व सफदरजंग के बीच कई दिनों तक चले इस युद्ध में सूरजमल के शौर्य का वर्णन करते हुए कवि ने लिखा है:-

यौं तोपनु की जंग मैं सूरज कियौ आबाद।
ज़र्रों होरी झर बीच तैं हरि राख्यो प्रहलाद।।9

अंत में सवाई माधव सिंह की मध्यस्थता व सूरजमल की सहमति से सफदरजंग एवं सम्राट में समझौता संपन्न हो गया । माधव सिंह ने सूरजमल को खासा सिरोपाव, सरपेच, जरी, तुर्रा , निमुसेला प्रदान कर विदाई दी ।10

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 1, January- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

कालांतर में सूरजमल को मीर बक्शी इमाद उल मुल्क की प्रबल शत्रुता का सामना करना पड़ा । इस जंग में प्रसंग वश मोहम्मद गौरी, पृथ्वीराज चौहान, दिल्ली सल्तनत के मुस्लिम शासकों में मुगल बादशाहों का उल्लेख आता है । कवि सूदन द्वारा दिया गया उनका कार्यक्रम व अन्य सूचना पूर्णतया इतिहास सम्मत है ।

सन् 1754 में मराठों के साथ हुआ जाटों का युद्ध कवि सूदन द्वारा रचित सुजान चरित में सप्तम जंग की विषय वस्तु है । जाट-मराठा संघर्ष के मूल में मराठों की आगरा, अजमेर, मथुरा व अन्य परगनों पर अधिकार करने की प्रबल आकांक्षा के बीच सूरजमल का बाधक बनना था । दूसरी ओर गृहयुद्ध में सूरजमल ने न केवल सफदरजंग का प्रबल समर्थन किया वरन् वह मीर बक्शी के अनुमोदन के बिना सफदरजंग एवं सम्राट के बीच समझौता कराने में सफल हुआ ।अतः मीर बक्शी मराठों की मदद से सूरजमल को इस धृष्टता के लिए दंडित करना चाहता था ।

इमाद उल मुल्क के कहने पर मराठा नेता मल्हार राव होलकर ने अपने पुत्र खांडेराव को जाट प्रदेश में आतंक पैदा करने के लिए भेज दिया । मराठों ने मेवात में खूब लूटपाट ,आगजनी व बर्बादी की । सूरजमल ने अपने मंत्री रूपराम कटारा को रघुनाथराव से समझौता वार्ता के लिए भेजा परंतु रघुनाथराव ने एक करोड़ खंडनी की मांग की। रूप राम ने चार लाख रूपये देने की पेशकश की जिसे रघुनाथराव ने ठुकरा दिया ।11

इसी बीच मराठा सेना ने आगे बढ़कर कुम्हेर दुर्ग को घेर लिया । जाटों एवं मराठों के बीच हुए इस युद्ध में मल्हारराव का पुत्र खंडेराव मारा गया । पुत्र खंडेराव की मृत्यु से क्रोधित मल्हार राव ने जाट राज्य को नष्ट करने की शपथ ली ।12

इस महान संकट काल में सूरजमल ने अपनी पत्नी हंसिआ के परामर्श से जयप्पा सिंधिया से मदद मांगी । क्योंकि मल्हारराव व जयप्पा सिंधिया में आपसी कटुता थी । दुर्ग की लंबी घेराबंदी व जयप्पा सिंधिया के नियमित प्रयासों से जाट-मराठा संघर्ष समाप्त हो गया । मराठों व सूरजमल में समझौता हो गया ।

सातवी जंग के साथ ही सुजान चरित ग्रंथ समाप्त हो गया है । इतिहासकारों का मानना है कि इसका कारण कवि की युद्ध में मृत्यु अथवा लेखन में असमर्थता रही होगी । किंतु इससे ग्रंथ का महत्व कम नहीं हो जाता । सुजान चरित में दी गई घटनाओं का विवरण फारसी लेखकों के विवरणों से मेल खाता है ,जो इसकी ऐतिहासिक यथार्थता को अभिव्यक्त करता है । तात्कालिक राजनीतिक व सामाजिक परिस्थितियों को समझने में यह ग्रंथ बहुत सहायक सिद्ध हुआ है। महाराजा सूरजमल के इतिहास लेखन में इस ग्रंथ की महती भूमिका रही है इस बारे में कुंवर नटवर सिंह ने तो यहां तक कह दिया ,यदि यह काव्य नहीं होता तो राजा बदन सिंह और महाराजा सूरजमल के जीवन तथा काल के विषय में हमारा ज्ञान इससे भी अल्प रहता जितना कि अब है।13

1. कुंवर नटवर सिंह,महाराजा सूरजमल, पृ. 21
2. उपेंद्र नाथ शर्मा, बृजेंद्र बहादुर महाराजा सूरजमल जाट, पृ. 146, बलदेव सिंह पृ.38 वाकया राजस्थान खंड 2 पृ.49

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 1, January- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

3. उपेंद्र नाथ शर्मा, बृजेंद्र बहादुर महाराजा सूरजमल जाट, पृ.147 बलदेव सिंह पृ.41-3
4. सुजान चरित ,संपादक डॉ राजेंद्र कुमार पृ .25
5. ठा. गंगा सिंह , भरतपुर का इतिहास पृ .158
6. सूर्यमल्ल मिश्रण, वंश भास्कर पृ.3518
7. सुजान चरित संपादक डॉ राजेंद्र कुमार प. 43 ,बलदेव सिंह पृ.46-47 वाकया राजस्थान खंड 2 पृ.52
8. सुजान चरित संपादक डॉ राजेंद्र कुमार प. 48 ता .अहमदशाही पृ .47अ,52ब, बलदेव सिंह, पृ.62-66
9.सुजान चरित ,संपादक डॉ राजेंद्र कुमार पृ .214
10. उपेंद्र नाथ शर्मा, बृजेंद्र बहादुर महाराजा सूरजमल जाट, पृ. 232 ,ता .अहमदशाही पृ.81ब
11. ठा. गंगा सिंह , भरतपुर का इतिहास पृ .190
12.उपेंद्र नाथ शर्मा बृजेंद्र बहादुर महाराजा सूरजमल जाट पृ.260, भाऊ बखर, अनु.5, पृ.4
13.कुं नटवर सिंह, महाराजा सूरजमल 1707-1763 पृ.150

सुमन गोयल
सहायक आचार्य, इतिहास
रामेश्वरी देवी कन्या महाविद्यालय,
भरतपुर।